Sanvahak (संवाहक)

A Peer Reviewed, Multidisciplinary (All Subjects) & Multilingual (All Languages) Quarterly Research journal

ISSN : 3108-1347 (Online)
Vol.-1; Issue-2 (Oct.-Dec,) 2025
Page No.- 06-10
©2025 **Sanvahak**
https:// sanvahak.gyanvividha.com

Author's :

श्रीमती सत्यवती चौरसिया
सहायक प्राध्याप, संस्कृत विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर.

Corresponding Author :

श्रीमती सत्यवती चौरसिया
सहायक प्राध्याप, संस्कृत विभाग
श्री कृष्णा विश्वविद्यालय, छतरपुर.

मेघदूतम् में पर्यावरण चेतना का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन

शोध सारांश : महाकवि कालिदास प्रकृति के अनन्य प्रेमी प्रकृति संरक्षक और संवेदनशील कवि थे- उनकी दृष्टि में प्रकृति मात्र दृश्य नहीं वरन् जीवन का सहचर है। मेघदूतम् में कवि ने प्रकृति एवं मानव में तादात्म्य स्थापित कर दिया है। इस गीतिकाव्य में कवि ने प्रकृति को मानवीय भावनाओं के साथ इस प्रकार जोड़ा है, कि वह पर्यावरणीय संवेदना का अद्भुत अनुभव प्रतीत होता है। यह काव्य केवल विरही यक्ष की कथा ही नहीं अपितु भारतीय पर्यावरण चेतना का उत्कृष्ट दर्पण भी है। कालिदास ने 'मेघ' को एक सजीव प्राणी के रूप में चित्रित किया है जो संदेश वाहक ही नहीं अपितु प्रकृति के जीवनदायी चक्र का प्रतीक भी है । मेघदूतम् एक खंडकाव्य है, जिसमें यक्ष अपनी पत्नी के वियोग वेदना से व्याकुल होकर 'मेघ 'को 'दूत'बनाता है। यह काव्य दो भागों में विभक्त है - पूर्वमेघ एवं उत्तरमेघ। पूर्व मेघ को बाह्य एवं उत्तर मेघ को अंतः में विभाजित कर प्रकृति की सौंदर्य को निखारा है। इस प्रकार पूर्व मेघ में विरही यक्ष सृष्टि सौंदर्य का दर्शन कर अपने दुःखी हृदय को आश्वासन देता है, उत्तरमेघ में वह प्रकृति के सहयोग में अपनी प्रियतमा के अतीत एवं भावी मिलन- सुख का अनुभव करता है। मेघदूतम् वर्षा ऋतु की ही उपज है, जिसमें वर्षा से प्रभावित होने वाले समस्त जड़ - चेतन पदार्थ का निरूपण कवि ने बड़ी ही स्वच्छंदता से किया है । विरह से व्याकुल यक्ष अपनी प्रेयसी के पास 'मेघ 'को प्रेम का संदेशवाहक 'दूत' बनाकर भेजता है। कवि द्वारा रचित यह कल्पना ही विश्व के साहित्य में अपूर्ण कोमल तथा हृदयवर्जक है। अर्थात् कवि ने मानव व पर्यावरण के बीच एक मजबूत और घनिष्ठ संबंध दिखाया है, जिसमें कवि ने मानव की जरूरतों और भावनाओं को प्रकृति के साथ सहयोगी भाव से जोड़ा है। कवि ने प्रकृति को केवल एक संसाधन के रूप में नहीं, बल्कि एक मूल्यवान और सुंदर रचना के रूप में प्रस्तुत किया है। आज की जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण प्रदूषण के दौर में मेघदूतम का

अध्ययन हमें प्रकृति अथवा पर्यावरण के प्रति हमारे व्यवहार और उसकी रक्षा के महत्व की याद दिलाता है। यक्ष की संवेदनाएं और मेघ की गति दोनों ही इस पारिस्थितिक तंत्र की लय से जुड़े हैं। यक्ष का मेघ से संवाद यह दर्शाता है,कि प्रकृति और मानव के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। आधुनिक पर्यावरण संकट के समय मेघदूतम् का संदेश हमें यह स्मृति दिलाता है, कि हम प्रकृति का सम्मान करें, और उसके साथ सहअस्तित्व बनाए रखें। इस महाकाव्य के आधार पर हम यह समझ सकते हैं, कि जल, वन, पर्वत, नदियाँ आदि केवल संसाधन नहीं बल्कि हमारी संस्कृति का एक हिस्सा भी है। महाकवि द्वारा प्रकृति का विशद् वर्णन उसकी पवित्रता अपरिहायर्ता एवं संरक्षण योग्यता को उजागर करता है।

बीज -शब्द-- कालिदास, मेघदूत, प्रकृति, पर्यावरण, सौंदर्य संवेदना, विरह, यक्ष चेतना।

प्रस्तावना : पर्यावरण चेतना का अर्थ है- मानव द्वारा प्रकृति एवं उसकी अंगों के प्रति संवेदनशील दृष्टि रखना ,संरक्षण की भावना रखने तथा संतुलित सह -अस्तित्व को स्वीकार करना। महाकवि कालिदास के युग में भले ही 'पर्यावरण' शब्द प्रचलित नहीं था परंतु मेघदूतम में उनके द्वारा प्रकृति के प्रति जो आदर प्रेम,से अस्तित्व और कृतज्ञता का भाव दिखाई दिया है, उसे ही हम आधुनिक अर्थों में पर्यावरण चेतना कह सकेंगे। महाकवि कालिदास की दृष्टि में प्रकृति केवल सुंदर दृश्य नहीं बल्कि संवेदनशील चेतना है, प्रकृति के प्रति सजीवता उनकी रचनाओं में अद्भुत है। पर्यावरण के विभिन्न घटकों- पर्वत, नदियां, वृक्ष, पशु, पक्षी, मेघ, वायु, मिट्टी आदि को जीवित प्राणी के रूप में प्रस्तुत किया है। वर्षा ऋतु के दृश्य में प्रभावित होने वाली समस्त जड़ चेतन पदार्थ का निरुपण कवि ने इस प्रकार किया जिसमें मेघ जिस-जिस मार्ग से होकर आगे निकलता जाता है, उस-उस मार्ग में अपनी छाप छोड़ जाता है—

नीपं दृष्ट्वा हरितकपिशं केसरैर्धरूढै-
राविर्भूतप्रथममुकुलाः कन्दलीश्चानुकच्छम् ।[1]
जगग्ध्वाऽरण्येष्वधिकसुरभिं गन्धमाघ्राय चोर्व्याः
सारङ्गास्ते जललवमुचः सूचयिष्यन्ति मार्गम् ।।पूर्व मेघ[2]

अर्थात् जल बरसने के कारण पुष्पित कदंब को भ्रमर मस्ति के साथ देख रहे होंगे, प्रथम वर्षा जल पाकर मुकुलित कन्दली को हिरण खा रहे होंगे एवं गज प्रथम जल (वर्षा) के कारण पृथ्वी से निकलने वाली गंध ले रहे होंगे- इस प्रकार भिन्न-भिन्न क्रियायों को देखकर मेघ के गणमार्ग का स्वत: अनुमान हो जाता है । पर्यावरण से मनुष्य का घनिष्ठ संबंध है,यही कारण है कि प्रकृति मनुष्य के अंतःकरण को प्रभावित करती है।

इस काव्य में कवि ने इसी तथ्य को उजागर किया है-

मेघालोकेभवतिसुखिनोऽप्यन्यथावृत्तिचेतः|
कण्थाश्लेषप्रणयिनि जने किं पुनर्दूरसंस्थे ||[3]

महाकवि कालिदास ने पर्यावरण से प्राप्त होने वाले सत्य का स्थान -स्थान पर उल्लेख किया है। कवि ने पर्यावरण को उपदेशिका के रूप में भी देखा है, जो मानव जीवन का मार्ग निर्देश करती है। मेघ बिना कुछ कहे चातकों को वर्षा जल प्रदान कर उनका उपकार करता है- आम्रकूट पर्वत के वनों में लगी अग्नि को वह मूसलाधार वर्षा द्वारा बुझा देता है। कवि ने आम्रकूट को कृतज्ञ कहा है। वह थके हुए हारे मेघ को अपने सिर पर धारण कर लेता है। कवि ने हमारे समक्ष पर्यावरण को जीवंत रूप में प्रदर्शित किया है। इस लेख में कवि ने यह स्पष्ट किया है कि किस प्रकार यक्ष अपने कर्तव्य में अनुशासित ना होने पर दंडित किया जाता है, अर्थात् प्रमाद करने पर उसके स्वामी कुबेर के कोपभाजन का विषय बना। स्वामी कुबेर ने उसे उसकी प्रियतमा के वियोग को एक वर्ष तक भोगने का शाप दिया और उसकी सारी शक्तियां विनष्ट कर दी जिससे उसका देवत्व नष्ट हो गया। कालिदास ने यहां मेघ को एक संदेशवाहक के रूप में

यक्ष की भावनाओं को व्यक्त किया है। यह चित्रण प्रकृति के साथ मानवीय संबंध स्थापित करता है ।कालिदास ने राम गिरी और अलकापुरी के प्राकृतिक दृश्य का बहुत ही सजीव और विस्तृत वर्णन किया है ,जो प्रकृति सौंदर्य और उसके महत्व को उजागर करता है। यहां मेघ प्रकृति को केवल एक संसाधन के रूप में नहीं बल्कि एक मूल्यवान और सुंदर रचना के रूप में देखा है। मेघदूतम् में पर्यावरणीय चित्रण आरंभ से ही राम गिरी आश्रम के उस प्रदेश से होता है, जहां के वृक्ष कोमल छाया वाले एवं सरोवर का जल सीता स्नान से पावन है। मेघदूतम् के पूर्व भाग में यक्ष द्वारा मेघ के प्रति किया हुआ मार्ग वर्णन अत्यंत रमणीय है, जिसे देखकर सहृदय का हृदय आनंद विभोर हो जाता है, अलकापुरी का मार्ग यक्ष द्वारा मेघ को इस प्रकार बताया जाता है—

छन्नोपान्तः परिणतफलद्योतिभिः काननाम्रैः
त्वय्यायारुढे शिखरमचलः स्निग्ध वेणीसवर्णे।
नूनं यास्यत्यमरमिथुनप्रेक्षनीयामवस्थां मध्ये
श्यामः स्तन इव भुवः शेषविस्तारपाण्डुः ॥पूर्व मेघ [4]

अर्थात मेघ जिस जिस मार्ग से होकर आगे की ओर बढ़ते जाते हैं, उन-उन स्थानों में मार्ग की सूचना प्रतीत होती जाती है। जब भी वर्षा करके अग्रिम पथ पर बढ़ते हैं, तब जल वर्षा के कारण पुष्पित कदंब को भ्रमण मस्त होकर देख रहे होते हैं।

संपूर्ण मानव जाति का पर्यावरण से बहुत घनिष्ठ संबंध रहा है। यही कारण है कि वह मनुष्य के अंतःकरण को प्रभावित करती है।

मदकल युवतिशशिकलागजयूथपयूथिका-शवलकेशी
स्थिरस्थिरयौवना स्थिता ते दूरालोके सुखालोका।। पूर्व मेघ[5]

अर्थात यक्ष कहता है कि हे गजराज - मद के कारण अस्फुट शब्द बोलने वाली युवतियों में चांदनी जैसी जूही -पुष्पों से चित्रित केशों वाली स्थायी यौवन से युक्त तथा देखने में सुंदर मेरी प्रिया को क्या तुमने कहीं दूर से ही देखा है। कवि के अनुसार प्रकृति में सर्वत्र प्रेम की छाया प्रसार पा रही है। कालिदास की सौंदर्य दृष्टि भी भारतीय संस्कृति के मूल्य और आदर्शों के अनुरुप उदार एवं पवित्र है । तपस्या से अर्जित सौंदर्य को ही महाकवि कालिदास सफल मानते है। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख-दुख में सहभागिनी निरुपित किया है। कवि ने नदी को नायिका सी प्रतीत माना है ,जिसमें यक्ष 'मेघ' से कहता है कि हे !मेघ उज्जियनी के मार्ग में निर्विघ्या नदी है जो तुम्हें अपने भाव से अपनी ओर आकर्षित करेगी। यह आकर्षण तरंगों की हलचल के कारण पक्षियों के शब्दायमान एवं पंक्ति रुपी करधनी को धारण करने वाली, स्खलित प्रवाह की कारण सुंदरता पूर्वक बहने वाली अर्थात मस्त होकर प्रवाहित होकर एवं भंवर रूपी नाभि को दिखाने वाली वह निर्विघ् नदी रूपी नायिका से मिलकर तुम रस अवश्य प्राप्त करना, क्योंकि कामिनियों का हाव - भाव प्रदर्शन ही रति प्रार्थना का वचन होता है । कवि ने यह संयोग श्रृंगार का बड़े ही रोचक ढंग से वर्णन किया है। वहीं दूसरी तरफ कवि ने इसे विरहिणी के रूप में भी चित्रित कर दिया ,जिसमें नदी की धारा वेणी की तरह पतली हो गई और तट पर पेड़ों के पीले पत्ते उसमें झड़कर आ गिरे जिससे उसकी कांति पीली पड़ गई। अतः यहां नदी के विरह रूप का वर्णन कवि ने बड़े ही रोचक ढंग से चित्रित किया है। इस प्रकार मेघ का धर्म हो जाता है कि वह जलवृष्टि करके इसकी कृशता को दूर करें। यही कारण है कि महाकवि कालिदास ने प्रकृति के उपादानों का आलंबन रूप में ग्रहण कर काव्य को नित -नूतन सौंदर्य प्रदान किया है जो अद्भुत है। विरह वेदना से ग्रसित यक्ष शिप्रा तट की वायु के माध्यम से अपनी प्रियतमा को संदेश भिजवाना चाहता है सुबह-सुबह शिप्रा तट में मिलते हुए कमल के सुगंध से सुशोभित वायु ,याचना करने से चापलूस प्रियतम की भांति रतिश्रांत

रमनियों की थकावट को दूर कर देती है। पुनः यक्ष मेघ से कहता है कि जब तुम और आगे बढ़ोगे तब तुम्हें अग्रिम नदियां जैसे गंभीरा सरस्वती एवं हिमालय से उतरी हुई तथा सागर पुत्रों को स्वर्ग भेजने वाली गंगा जी भी मिलेगी, वही गंगा जी जिन्होंने पार्वती जी के मुख की भंगिमा का मानो उपहास करके, चंद्रमा को छूती हुई तरंगों रुपी हाथों से युक्त होकर शिव के केशों को पकड़ लिया है। महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के उत्तर मेघ भाग का वर्णन प्रमुख छ: ऋतुओं में एक ही छंद में इस प्रकार निबद्ध किया है जो कोई अन्य कवि करने में सक्षम नहीं होगा ।जैसा कि श्लोक द्वारा यह स्पष्ट किया जा सकता है।

हस्ते लीलाकमलमलके बालकुन्दानुविद्धं
नीता लोध्रप्रसवरजसा पाण्डुतामानने श्री।:
चूडापाशे नवकुरवकं चारु कर्णे शिरीष:
सीमन्ते च त्वदुपगमजं यत्र नीपं वधूनाम्।। उत्तर मेघ[6]

अर्थात् इन पंक्तियों के द्वारा कवि ने अलकापुरी में षड्ऋतुओं की निरंतर अवस्थिति की विलक्षण कल्पना को बड़ी निपुणता से चित्रण किया है। कवि ने अलकापुरी की प्रकृति का सौंदर्य वर्णन बड़ी ही रोचकता के साथ किया है। जिसमें रमणियों के हाथ में कीड़ा कमल, बालों में नए-नए कुंद पुष्पों का बंधन, मुख पर लोध के फूलों के पराग से गौरव को प्राप्त हुई शोभा, जूड़े में नए कुरबक के फूल, कानों पर सुंदर शिरीष के फूल और मांग में तुम्हारे आगमन से वर्षा ऋतु में खिलने वाली कदंब के फूल रहते हैं। इस प्रकार षड् ऋतुओं का अद्भुत वर्णन कवि ने बड़ी रोचकता के साथ किया है, यदि हम इनमें अपने भावों का समावेशन करें तब प्रकृति का यह अद्भुत आनंद हमें भाव विभोर कर देता है। इसके अतिरिक्त अलका के सदैव कमलिनियों को प्रफुल्लित होने वाले फूल एवं भौंरों के गूंजवान से युक्त वृक्षों, हंसों की कतारों से घिरी कमलिनियों का सुंदर वर्णन किया है। इस प्रकार मेघदूतम प्रकृति के भाव चित्रों से भरा पड़ा है। महाकवि ने प्रकृति को 'अनुज', 'सखा', 'संदेशवाहक' जैसे विभिन्न रूपों में देखा है,जो पर्यावरण के साथ भावनात्मक रिश्तों का संकेत है। महाकवि कालिदास की प्रकृति में कोमल भाव- प्रेम तत्व का समाभाव है। कालिदास ने प्रकृति को मनुष्य के सुख-दुख में सहभागिनी रुप में निरुपित किया है। विरही राम को लेटकर अपनी पत्तों को झुका झुका कर सीता के अपहरण का मार्ग बताती हैं, कालिदास ने संपूर्ण प्रकृति को संपूर्ण चराचर में मानव की भांति व्यवहार करती दिखाया है। उत्तर मेघ में कवि ने मानवीय भावनाओं के साथ इस प्रकार जोड़ा है जैसे- पपीहा नामक पक्षी के जल मांगने पर मेघ बिना उत्तर दिए ही सीधे उसे जल प्रदान कर देता है इसी प्रकार कवि ने सज्जन पुरुषों को मेघ के समान जानकर कहा है कि यदि इनसे कुछ मांगा जाए तो वे मुहँ से कुछ कहे ही काम को पूर्ण कर देते हैं। महाकवि कालिदास ने मेघदूतम् के उत्तर मेघ में अलका नगरी का सौंदर्य प्रकृति से जोड़कर इस प्रकार किया है जैसे संपूर्ण प्रकृति अलका नगरी में ही समाविष्ट हो गई हो। कवि ने अलका को अप्सराओं और देवताओं के समान सुशोभित, हरियाली से भरी और विलासमयी नगरी के रूप में चित्रित किया है। यहां के घर चांदी की तरह चमकते हैं, उद्यानों में मंद पवन बहती है और ऋतु का सौंदर्य सदैव स्थिर रहता है । विरहिणी नायिका को मेघ एक महल में एकाकी पाता है यह विरह से क्षीण उदास एवं अश्रुपूर्ण है। उसकी सुंदरता ग्रह के कारण मंद पड़ गई है, चंद्रमा भी उसकी पीड़ा को और अधिक बढ़ाता है क्योंकि वह यक्ष को स्मरण कराता है, अश्रु उसके गालों पर मोतियों की तरह चमकते हैं। यहां महाकवि ने सहयोग स्मृति एवं विरह दशा का बड़ा मार्मिक वर्णन किया है।

निष्कर्ष :महाकवि कालिदास प्रकृति सौंदर्य उपासक अमूर्त को मूर्त रूप देने में बडे दक्ष हैं। यश का प्रेम संदेश उनकी कोमल हृदय का स्वाभाविक स्नेह का तथा नैसर्गिक सहानुभूति का एक मनोरम प्रतीक है जो दिन प्रतिदिन आनंदातिरेक ही करता है। उन्होंने मेघ एवं पर्वतों को दक्षिण अनुकूल नायक एवं नदियों को स्वाधीनपतिका के रूप में

बड़े ही चमत्कारिक रूप से चित्रित किया है। महाकवि ने मेघदूतम् में मानव व पर्यावरण के बीच एक मजबूत एवं घनिष्ठ संबंध को दिखाया है कवि ने पर्यावरण में सजीवता का जीवंत वर्णन किया है आज आधुनिक दौर पर हम संपूर्ण मानव जाति कहीं ना कहीं पर्यावरण से दूरियां बना रहे हैं। अपनी सुख सुविधाओं के लिए हरे भरे वृक्षों की कटाई कर रहे हैं, जिससे भविष्य में आने वाली पीढ़ियों के लिए खतरा बन जाएगा। अतः हम कालिदास के काव्यों का अध्ययन कर प्रकृति के जीवंत को अपनी स्मृति पटल में संजोयेगे। महाकवि कालिदास ने इस काव्य में मेघ, पवन, वृक्ष, नदियों, पर्वतों, पशु-पक्षियों आदि को जीवंत व्यक्तित्व प्रदान किया है। 'यक्ष 'का 'मेघ' से संवाद यह दर्शाता है, कि प्रकृति और मानव के बीच बहुत ही गहरा व भावनात्मक संबंध है। आज हमारे समक्ष ग्लोबल वार्मिंग वनों की कटाई प्रदूषण नदियों का चरण जैव विविधता का ह्रास आदि ऐसी चुनौतियाँ सामने हैं जिसका सामना, हम 'मेघदूतम' के पर्यावरण अध्ययन को आत्मसात करके ही कर सकेंगे। अतः मेघदूतम वर्तमान विश्व को पर्यावरण संरक्षण प्रकृति अनुराग और जिम्मेदार जीवन शैली अपनाने का सशक्त संदेश देता है। आधुनिक दृष्टि से यह काव्य पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों के लिए प्रेरणा का स्रोत हो सकेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. महाकवि कालिदास, मेघदूतम 1/1
2. लक्ष्मीधर भट्ट- कालिदास के काव्य में प्रकृति चित्रण
3. महाकवि कालिदास, मेघदूतम्. 1/3
4. महाकवि कालिदास, मेघदूतम्.1/44
5. महाकवि कालिदास, मेघदूतम् 2/57
6. महाकवि कालिदास, मेघदूतम1/53

•